REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

सामन्तवाद का आर्थिक जीवन पर प्रभावः एक समीक्षात्मक अध्ययन

अनिल प्रसाद सिंह
शोधार्थी, इतिहास विभाग, ल0ना0मिथिला विश्वविद्यालय,दरभंगा.

सारः
सामन्तवादी व्यवस्था का सीधा प्रभाव मिथिला के आर्थिक जीवन पर पड़ा। अपने–अपने क्षेत्रों के सामंत शासक स्वतंत्र होकर स्वेच्छाचारितापूर्वक शासन करने लगे। इस कारण से मिथिला कई भागों में बँट गया और एक भाग का दूसरे से कोई खास लगाव नहीं रह गया था। कुछ साक्ष्य ये जानकारी देते हैं कि सातवीं शताब्दी में कर देनेवाले किसानों

को अपने गाँव से अन्यत्र बस जाने का अधिकार नहीं था।[1] इस व्यवस्था से स्थानीयता के भावना को काफी मदद मिली। उत्पादन एवं प्रशासन के स्थानीय इकाईयों के विकास के फलस्वरूप पाल शासन के समय में सिचाई की व्यवस्था करना स्थानीय उत्तरदायित्व बन गया था।[2] उपर्युक्त परिवर्त्तन होने से केन्द्रीय सत्ता निर्बल होने लगी और स्वतंत्र आर्थिक इकाईयों का उदय हुआ।

प्रस्तावनाः

गुप्तकाल के बाद से मिथिला में सिक्कों की कमी होना भी उत्पादन के स्थानीय इकाई के उदय की पुष्टि करते हैं। गुप्तवंश के पतन के बाद और कर्णाट शक्ति के उदय होने के मध्यपाल, गुर्जर, राष्ट्रकूट एवं चंदेल राजवंशों द्वारा मिथिला पर शासन किये जाने का संकेत प्राप्त होता है।[3] हर्षवर्धन के समय में भी संभवतः सिक्का जारी नहीं किया गया था।[4] पालों द्वारा सिक्का जारी करने का प्रयास अवश्य किया गया पर वे उसमें असफल रहे। फिर भी साक्ष्यों के आकलन पालों द्वारा कुछ चाँदी एवं ताँबे के सिक्कों को जारी किये जाने के संकेत देते है।[5] हालांकि इन सिक्कों के प्रामाणिकता पर संदेह है। सिक्कों के जारी किये जाने में गुर्जर एवं राष्ट्रकट शासकों की स्थिति भी पालों के समान ही थी।[6] स्मिथ के अनुसार चंदेलों ने भी कोई सोने या चाँदी के सिक्के जारी नहीं किये।[7] मिथिला में कर्णाट शासकों के समय के सिक्के उपलब्ध नहीं हो सके हैं। ओइनवार शासक शिवसिंह के द्वारा संभवतः अपने नाम से स्वर्ण मुद्रा जारी किया गया था। 1913 ई० में दो तरह के स्वर्ण सिक्कों की खोज हुई जिस पर 'श्री शिवस्य' लिखा हुआ है।[8] आर० डी० बनर्जी इसे शिवसिंह के समय का मानते है।[9] उपेन्द्र ठाकुर के कथनानुसार शिवसिंह का कुछ अन्य सिक्का भी प्राप्त हुआ है।[10] साक्ष्यों के अभाव में कुछ भी कहना कठिन है, परन्तु ओइनवार शासकों के समय का दो चाँदी का सिक्का भी प्राप्त हुआ है।[11] राधा कृष्ण चौधरी उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर पूर्व मध्यकालीन मिथिला में सिक्कों के अभाव से सहमत नहीं है।[12] परन्तु इन चार सिक्कों के आधार पर पूर्व मध्यकालीन मिथिला के आर्थिक व्यवस्था में सिक्कों की भूमिका को महत्त्वपूर्ण नहीं माना जा सकता है। ओइनवार कालीन सिक्के के अध्ययन से स्पष्ट संकेत मिलता है कि इनका परिभ्रमण संकुचित था, और ये विशेष आर्थिक महत्त्व के न थे। राधाकृष्ण चौधरी भी सिक्कों के आर्थिक महत्वहीनता को स्वीकार करते हैं।[13] उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि पूर्व मध्यकालीन मिथिला में

सिक्कों का अभाव था, जिसका कारण प्रायः आर्थिक व्यवस्था का सामंतीकरण एवं अन्तर्देशीय व्यापार का क्षय था। उत्पादन के स्थानीय इकाई के कारण स्थानीय इकाई का कार्य स्थानीय आवश्यकताओं के लिए उत्पादन करना रह गया था। इस व्यवस्था के फलस्वरूप अन्तर्देशीय मुद्रा प्रणाली की जरूरत नहीं रह गई और समाज में मुद्रा की कमी तथा कौड़ी का प्रचलन अवश्यम्भावी हो गया।[14]

पूर्व मध्यकालीन मिथिला में अन्तर्देशीय व्यापार का क्षय हुआ, इसका आकलन साक्ष्यों के आधार पर किया जा सकता है। मो0 अकीक के अनुसार प्राचीन कालीन मिथिला में आठ व्यापारिक मार्ग थे। (1) मिथिला–राजगृह, (2) मिथिला–श्रावस्ती, (3) मिथिला–कपिलवस्तु, (4) विदेह–पुष्पकलावती, (5) मिथिला–प्रतिष्ठान, (6) मिथिला–सिन्धु, (7) मिथिला–चम्पा, (8) मिथिला ताम्रलिपि।[15] पूर्व मध्यकालीन मिथिला के साक्ष्यों में एक भी मार्ग का विवरण न मिल पाना, स्पष्ट संकेत देता है कि इस काल तक आते–आते ये सारे व्यापारिक मार्ग बेकार हो गए थे। व्यापारिक मार्गो के बेकार होने का कारण निश्चित रूप से अन्तर्देशीय व्यापार का क्षय होना था। व्यापार में क्षय का प्रमाण लिखनावली में भी मिलता है। पत्र संख्या 30 में कहा गया है कि हाट आदि की व्यवस्था एक व्यक्ति को दिया गया।[16] हाट की व्यवस्था का व्यक्ति विशेष को दिए जाने के प्रमाण के आधार पर कहा जा सकता है कि व्यवस्था लेनेवाला व्यापारी लोगों को उतनी स्वतंत्रता नहीं दिया गया होगा, जितना की राज्य के द्वारा किया जा सकता था।

पाल कालीन साहित्य एवं अभिलेखों में अन्तर्देशीय व्यापार का प्रमाण कम मिलता है तथा प्राप्त प्रमाण विशेष रूप से समय–समय पर लगनेवाले स्थानीय हाट की संकेत देते हैं।[17] राधा कृष्ण चौधरी पूर्व मध्यकालीन मिथिला के हाटों की महत्ता पर बल देते हैं।[18] परन्तु अन्तर्देशीय व्यापार को भी उन्नत मानते हैं। इस संदर्भ में डा० उपेन्द्र ठाकुर का कथन की इस समय व्यापार प्रायः लुप्त हो गया था, सर्वथा उचित जान पड़ता है।[19] मो० अकीक के अनुसार छठी शताब्दी तक मिथिला का विदेश व्यापार काफी उन्नत था।[20] अकीक लिखते हैं कि 1097 ई० तक व्यापार की स्थिति में अन्तर नहीं आया था। यह मन्तव्य उचित प्रतीत नहीं होता है। मो० अकीक के ही अनुसार मिथिला का सामूहिक वाणिज्य–व्यापार मुख्यतः ताम्रलिप्ति से होता था।[21] आठवी शताब्दी आते–आते अरबों का अधिकार सिंध पर हो गया एवं कालानुक्रम में अरबों ने स्पेन से भारत एवं चीन पर्यन्तक क्षेत्र पर राजनीतिक एवं व्यापारिक प्रभुत्व कायम किया। इस परिवर्तन का प्रारंभ 7वीं सदी के मध्य से हो गया था।[22] ह्वेनसांग एवं इत्सिंग के कथनानुसार आठवी शताब्दी से बन्दरगाह या अन्य में ताम्रलिप्ति का वर्णन नहीं मिलता है।[23] इस तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि पूर्व मध्यकाल में ताम्रलिप्ति व्यापार के दृष्टिकोण से महत्त्वहीन हो गया था। इसका प्रभाव मिथिला के सामूहिक व्यापार पर पड़ा होगा और यह कहा जा सकता है कि सातवीं शताब्दी से मिथिला का सामुद्रिक व्यापार समाप्ति की कगार पर था। व्यापार के बारवेरिकम बन्दरगाह का वर्णन मो० अकीक के द्वारा किया गया है।[24] परन्तु संभवतः पूर्व मध्यकाल तक आते–आते यह बन्दरगाह और मिथिला सिन्धु पथ का वर्णन देखने को नहीं मिलता है। चीन, नेपाल एवं तिब्बत से पूर्व मध्यकालीन मिथिला के व्यापार के संदर्भ में भी ऐतिहासिक प्रमाण का अभाव दिखता है।[25] विदेशी व्यापार में ह्रास के कारण तटवर्ती शहर एवं भीतरी भाग के शहर तथा शहर एवं गाँवों के बीच आर्थिक संबंध कमजोर हुए।[26] जिसके कारण शिथिल होते अन्तर्देशोय व्यापार को भी धक्का लगा।

पूर्व मध्यकालीन मिथिला में व्यापार के क्षय होने से अधिकतर शहर नष्ट हो गया। शहरी के उत्पत्ति का एक प्रमुख कारण व्यापार था।[27] और यही मृतप्राय हो चला था। वाणिज्य–व्यापार में क्षय होने से पूर्व मध्यकालीन मिथिला में व्यापारी, वणिक एवं शिल्पियों के इज्जत में कमी आई। गुप्तकाल तक सार्थवाहकों के संबंध में वर्णन मिलता है कि उनका समाज में एक प्रमुख स्थान था।[28] पूर्व मध्यकाल में उनका वर्णन नहीं मिलता है। साक्ष्यों के विवेचन से ज्ञात होता है कि व्यापारी वर्ग में जो निम्न वर्ग के थे उन्हें धीरे–धीरे शुद्र वर्ग में रख दिया गया।[29] कारीगर और शिल्पी वर्गो का हालत काफी खराब हो गया था।[30] पूर्व मध्यकाल में लोग शिल्पी वर्ग को घृणा की दृष्टि से देखने लगे।[31] पूर्व मध्यकालीन मिथिला में इन लोगों के हालात काफी दयनीय थे।[32] श्रेष्ठी, निगम, वीथी और विदह का या वैदेह शब्द में जो आर्थिक अर्थ समाविष्ट था वो समाप्त होने लगा और इसका अर्थ बदलकर सामाजिक वर्ग अक्सर अछूत या ग्रामीण इकाई हो गया।[33] इन परिवर्तनों से स्पष्ट संकेत मिलता है कि पूर्व मध्यकालीन मिथिला में व्यापार का महत्त्व लुप्तप्राय हो गया था।

निष्कषः

पूर्व मध्यकालीन मिथिला में शहरों का पतन, शिल्पी एवं व्यापारियों की दयनीय स्थिति तथा सिक्कों की कमी से यह बात स्पष्ट हो जाता है कि व्यापार में ह्रास हो गया था। इस अवस्था के कारण समाज पूर्ण रूप से भूमि पर आश्रित हो गया। तत्कालीन ग्रंथों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आर्थिक रूप से समाज पूर्णतया खेती पर निर्भर था। शहरों के नष्ट हो जाने से शहरवासी एवं व्यापारी लोग खेती योग्य जमीन की तलाश में गाँवों की ओर आए। इस नये परिवर्तन के फलस्वरूप जमीन पर दबाव बढ़। पूर्व मध्यकाल में मिथिला के जमीन का छोटे–छोटे टुकड़ों में बाँटा जाना भी उपर्युक्त तथ्यों की पुष्टि करते है।

संदर्भ सूचीः–

1. जे0एफ0 फलीट, कोरपस इन्सक्रिप्शन्स इंडिकेरम, जिल्द–III, सं0,60 II,12–13
2. आर0 मुखर्जी,आर0एस0 के0 मैत्री, कॉरपस ऑफ बंगाल इन्सक्रिप्शन्स, 1967, पृ0–47–48
3. मो0 अकीक, पूर्वोक्त, नई दिल्ली, 1974, पृ0–186
4. विजय कुमार ठाकुर, ''इकॉनोमिक चेंजेज इन इर्ली मिडियेवल इंडिया'', डी0डी0 कोशाम्बी कोमेमोरेशन वोल्युम, वाराणसी, 1977, पृ0–189
5. आर0सी0 मजुमदार (सं0) दी हिस्ट्री ऑफ बंगाल जिल्द–I, 1963, पृ0–667–68
6. विजय कुमार ठाकुर, डी0डी0 कोशाम्बी कोमेमोरेशन वोल्युम, पृ0–181
7. केटलॉग ऑफ दी क्वायन्स इन दी इंडियन म्यूजियम, 1906, जिल्द–I,पृ0–646
8. द्रष्टव्य, कनिंघम, क्वायन्स ऑफ मिडियेभल इंडिया, कलकत्ता,1924
9. राधा कृष्ण चौधरी, मिथिला इन द ऐज ऑफ विद्यापति, पूर्वोक्त, पृ0–603
10. जर्नल आफ दी न्यूमिसमैटिक सोसायटी ऑफ इंडिया, जिल्द–XI, पृ0–661
11. राधा कृष्ण चौधरी, मिथिला इन द ऐज ऑफ विद्यापति, पूर्वोक्त, पृ0–106–07
12. उपर्युक्त, पृ0–207
13. जनरल ऑफ इंडिया हिस्ट्री, जिल्द–XXXIII, पृ0–202
14. द्रष्टव्य, उपेन्द्र ठाकुर, मिन्ट्स एण्ड मिंटिंग इन इडिया, वाराणसी, 1972 प्रथम अध्याय
15. मो0 अकीक, पूर्वोक्त, पृ0–141–44
16. लिखनावली, पृ0–24
17. आर0सी0 मजुमदार (सं0) दी हिस्ट्री ऑफ बंगाल, ढ़ाका, 1934, पृ0–650–60
18. राधा कृष्ण चौधरी, मिथिला इन द ऐज ऑफ विद्यापति, पूर्वोक्त, पृ0–196
19. उपेन्द्र ठाकुर, हिस्ट्री ऑफ मिथिला, प्रथम संस्करण, दरभंगा–1956, पृ0–366
20. मो0 अकीक, पूर्वोक्त, पृ0–53
21. उपर्युक्त, पृ0–144
22. निहार रंजन रे, बंगलौर इतिहास (आदि पर्व), पृ0–198
23. उपर्युक्त, पृ0–199
24. मो0 अकीक, पूर्वोक्त, पृ0–148
25. उपर्युक्त, पृ0–152–53
26. रामशरण शर्मा, सोशल चेंजेज इन अर्ली मिडियेवल इंडिया, पृ0–1
27. विजय कुमार ठाकुर, डी0डी0 कोशाम्बी कोमेमोरेशन वोल्युम, पृ0–191
28. ए.एल0वैशम, दी वन्डर दैट वाज इंडिया फोन्टाना वुक्स, 1971, पृ0–237
29. उपर्युक्त, पृ0–346
30. उपर्युक्त, पृ0–346
31. निहार रंजन रे, पूर्वोक्त, पृ0–346
    चर्तुवर्ग चिन्तामणि, प्रायश्चित खंड, पृ0–198
32. राधा कृष्ण चौधरी, मिथिला इन द ऐज ऑफ विद्यापति, पूर्वोक्त, पृ0–223–24
33. रामशरण शर्मा, इंडियन फ्यूडेलिज्म रिटच्ड, दी इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू जिल्द–1, भाग–2, पृ0–326–27